तीसरी मासिक पुण्य तिथि पर कार्यक्रम

आचार्यश्री महाप्रज्ञ पंडित पुरुष थे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, 6 अगस्त, 2010

आचार्य महाश्रमण ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ की तीसरी पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम में कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ पण्डित पुरुष थे। पण्डित केवल ज्ञान से ही नहीं होता। त्याग, संयम और साधना से पंडित बनता है। जिसके सारे क्रिया कलाप काम और संकल्प से रहित होते हैं, जिसने कर्म दाध कर दिया वह पंडित कहलाता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ में ज्ञान का पांडित्य था। उनके जीवन का अधिकांश समय ज्ञान आराधना में बीता। पूज्यवर में साधना का सौष्ठव था। उनके भीतर अनुकंपा की सरीता प्रवाहित होती रही।

उन्होंने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में बीताये क्षणों की सुखद यादों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्यप्रवर सुख नींद सोते और हमेशा प्रसन्न रहते थे। जो धर्मरस का पान करता है वही सुख नींद लेता है, सुख नींद लेना एक साधना का प्रयोग है। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री का प्रवचन प्रभावी होता था। जिन शब्दों की आत्मा साधना बन जाती है। उन शब्दों का असर होता है। आचार्यवर केवल वक्ता ही नहीं उनकी साधना बोलती थी। उन्होंने हिरोशिमा दिवस का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंसक हथियार देश की सुरक्षा के लिए जरूरी होते हैं परंतु हिंसक साधनों से ज्यादा शांति के साधनों के निर्माण पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने डॉ. कलाम को आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा शांति मिसाईल तैयार करने के निर्देश की भी चर्चा की। आचार्यप्रवर ने मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा द्वारा साहित्य लेखन एवं सम्पादन में आचार्यश्री महाप्रज्ञ की, की गई सेवाओं का विशेष उल्लेख किया।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि जिन्होंने भी आचार्यश्री महाप्रज्ञ को सुना है वह उन्हें भूल नहीं सकता। आज के दिन उनकी स्मृतियां ज्यादा हलचल पैदा करती है। उन्होंने कहा कि आचार्यप्रवर वर्तमान में जीते थ। उनकी इच्छा शक्ति प्रबल थी। जिसकी इच्छा शक्ति प्रबल होती है वह स्थितप्रज्ञ होता है। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने अपन श्रद्धासिक्त विचार व्यक्त किये। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने काव्य पंक्तियों के द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ के कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। साध्वी संगीत प्रभा विमला छाजेड़, रूचिका दुगड़ ने गीतों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

चार चरणों में होगा आचार्य महाश्रमण का अमृत महोत्सव

आचार्य महाश्रमण के जीवन का 50वां वर्ष अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जायेगा और यह महोत्सव चार चरणों में आयोजित होगा। उक्त घोषणा आचार्य महाश्रमण ने साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा की अर्ज पर स्वीकृति के रूप में की। अमृत महोत्सव का प्रथम चरण 12 मई 2011, दूसरा चरण 9 सितम्बर 2011, तीसरा चरण 29 जनवरी 2012, चौथा चरण 30 अप्रैल 2012 को मनाया जायेगा। आचार्य महाश्रमण ने अमृत महोत्सव के प्रवक्ता के तौर पर मुनि कुमार श्रमण की नियुक्ति की। इसके साथ ही आचार्य महाश्रमण ने 2014 के घोषित लाडनूं चातुर्मास पर पुर्नविचार करने की घोषणा की।

ऑल इण्डिया तेरापंथ प्रोफेशनल सम्मेलन आज

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में दो दिवसीय ऑल इण्डिया तेरापंथ प्रोफेशनल सम्मेलन का आज (| अगस्त) प्रातः 8.30 बजे शुभारम्भ होगा। तेरापंथ भवन में आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में डॉक्टर, इंजीनियर, एडवोकेट, प्रोफेसर, सी.ए., एम.बी.ए. आदि 300 से ज्यादा प्रोफेशनल संभागी बनेंगे। इस सम्मेलन के निर्देशक मुनि रजनीशकुमार ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ के इंगित से गठित हुए तेरापंथ प्रोफेशनल फॉर्म केरियर काउन्सलिंग, फंड अरेंजमेंट, जॉब अरेन्जमेंट एवं तेरापंथ के अवदानों को विश्व व्यापी बनाने के क्षेत्र में काम करेगा। उन्होंने बताया कि 2014 आचार्य जन्म शताब्दी वर्ष तक लगभग 50 प्रोफेशनल लोगों को राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विषयों के प्रवक्त बनाने का लक्ष्य है।

तेरापंथ प्रोफेशनल फॉर्म के शिविर कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार इस सम्मेलन के प्रायोजक मूलचन्द विकास कुमार मालू हैं। इस सम्मेलन में प्रोफेशनल लोगों का सामाजिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने में योगदान मिल सके इस पर जोर दिया जायेगा। सम्मेलन को अनेक मुख्य वक्ताओं द्वारा सम्बोधित किया जायेगा।

- शीतल बरड़िया *(मीडिया संयोजक)*